त्रिपुरी वर्णन

44.47
16292

४५
-त्रि

लेखक प्रकाशकः—
पं. प्रेमशंकर उदयशंकर दवे
अमरावती (व्र्हाड)

मूल्य ≡)

...मुद्रकः—
... केळापुरे
...स, नागपूर.

8
86

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१६२५२
२६-१-५३ 84/86
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

प्रस्तावना

देशाटन करनेवालों को प्रायः ऐसा अनुभव आता है कि योग्य पुस्तक प्रगट न होने से किसी स्थल में आ जाने पर भी यह नहीं पता लगता कि रामायण, महाभारत, पुराण, इतिहासादि में लिखित यह कौनसा स्थान है, ग्रन्थों के स्थलों का अपने को ज्ञान अलग है और प्रत्यक्ष स्थान अलग देख रहे हैं, दोनों का सम्बन्ध करनेवाले तृतीयस्थ की आवश्यकता रहती है, जैसे रेल में बैठा हुआ यात्री विन्ध्या–सतपुडा, सह्याद्रि, आराबली आदि पर्वत, विदर्भ, मालवा, कौशल आदि देश, नर्मदादि नदी बडे वेग से लांघता हुआ चला जाता है परन्तु बिना पुस्तक के उसको यात्रा में न आनन्द ही होता है और न श्रद्धा उपजती है। एक बार अवसर निकल जाने पर न उतना समय है न पैसा और न शरीर में शक्ति ही है कि फिर जाकर प्रेक्षणीय स्थानों का लाभ उठा सकें। ऐसा भी देखा गया है कि दीर्घ काल तक वहां वास करने पर भी यह नहीं पता लगने पाता की कहां बकवध हुआ था या कहां रानी दुर्गावती वीरगति को प्राप्त हुई थी। इस पश्चात्ताप से बचने के लिये ही यह 'त्रिपुरी–वर्णन' नामक छोटासा ग्रन्थ लिखा गया है।

हमारे पास जो पुराना संग्रह था उसमें से, वहां के दीर्घ काल के वास से तथा निम्नलिखित और अन्य भी ग्रन्थों से उद्धृत कर यह ग्रन्थ संकलित किया है, इन ग्रन्थकर्ताओंको [illegible] है:—

१. राय बहादुर हीरालाल [illegible]
२. जबलपुर का [illegible]
३. मंडला ,, [illegible]

CHECKED 1973
44,47 16292
CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४. कनिंघाम का पुरातन भूगोल (Cunningham's Ancient Geography of India)
५. डाक्टर भंडारकर का दक्षिण का पुरातन इतिहास [Doctor Bhandarkar's Early History of Deccan]
६. नन्दोलाल डे कृत कोश Geographical Dictionary of Ancient and mediviael India by Nundolal Dey
७. प्राचीन ऐतिहासिक कोश. रघुनाथ भास्कर गोडबोले कृत.
८. आर. सी. दत्त का प्राचीन इतिहास—R. C. Dutta's Ancient History of India
९. नर्मदा पंचाग—मायानंद चैतन्य कृत.
१०. भुवन कोशांक—भूगोल.
११. रेवाखंड महात्म्य.
१२. महाभारत.
१३. लिंगपुराण.
१४. शिवपुराण—आदि.

फा० कृ० १ सोमवार
शके १८६० संवत १९९५.

प्रेमशंकर उदयशंकर दवे
उमरावती [वन्हाड]

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रिपुरी वर्णन

महादेव जी ने त्रिपुरासुर वध जिस "त्रिपुरी" में किया था वह यही "तेवर" नामक छोटा सा गांव जबलपूर से भेडाघाट जाने की पक्की सडक पर ७ मील की दूरी पर नर्मदा नदी के समीप है। ग्रन्थोंमें ऋग्वेद में जिस चेदि देश का उल्लेख आया है और वेदिक महाभारत–रामायण पुराणादि ग्रन्थों में जिस कोशल चेदि लोगों के विषय में जगह जगह वर्णन आया है तथा विन्ध्या और सतपुडा की पर्वत श्रेणिओं की संधि में और पवित्र नर्मदा नदी के उद्गम स्थान से लेकर नदी के आसपास जो दिव्य भूमि है उस को कोशल, चेदि, महाकोशल, त्रिपुरी कहा है। इस स्थान में पर्वतो, जंगल, और नदी की शोभा देखते ही बनती है, प्राकृतिक सौंदर्य का अच्छा दृश्य है ऐसे रमणीय सुहावने स्थान का तपश्चर्या के लिये भृगु, जाबाल आदि ऋषि मुनियोंने सेवन किया था। त्रिपुरासुर ने यहां अपनी राजधानी बनाई थी। उस के वंशजों ने यहां देवतओंसे भी अभेध्य ३ पुर बसाये थे जिस मे केवल "तेवर" का पत्ता निश्चयात्मक रूपसे है। इस त्रिपुरी मे बौद्ध धर्म का इतना जोर था कि शैवों को बिना कूटनीति के अपना पैर जमाना असंभव हो गया था जिस का वर्णन लिंग पुराण में किया गया है त्रिपुरासुर के समय से आज तक इस भूमिमेंही राज्य का केन्द्र रहा है। इस त्रिपुरी को चेदिनगर ही कहने लगे थे. हैहयवंश–कालाचुरी की राजधानी यही त्रिपुरी थी। तद् पश्चात् उस से कुछ हट कर गोंड राजाओं ने तेवर से ३।४ मील पर गढ़ा में अपनी राजधानी और गढ़ बनाया फिर मरहट्टोंने गढ़ा से ३ मील

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर जबलपुर की नीव डाली और अब अंग्रेजी राज्य में भी यह महाकोशल का केन्द्र है। अंग्रेजी पलटन ने गदर के पहिले सेही ता० २० दिसंबर सन १८१७ से यहाँ अपना अड्डा जमाया है सन १८२० से यहां गवर्नर जनरल का एजंट रहने लगा था। सन १८३५ से बीच में २ बार अंग्रेजों ने यहां से राजकेन्द्र सरकाकर पश्चिमोत्तर देश में जा मिलाया था परंतु भूमि तो त्रिपुरी की पुकारती थी। पुनः जबलपुरको सन १८६१ मे कमिश्नरी बनाना पडा। गवर्नर साहेब यहां प्रतिवर्ष डेढ माह रहते है। यहां पर गोली बारूद बनाने का भी बडा भारी कारखाना (Gun Carriage Factory) है। भारत वर्ष में ही क्या अन्यत्रभी पुरातन काल मे निस्तार और रक्षा के हेतु नगर नदी के किनारे बसाये जाते थे। और वहां नदी न होने पर पर्वत शिखर पर। यहां किले भी बान्ध लिये जाते थे। स्वार्थ और परमार्थ दोनों की सिद्धि के लिये इस दिव्य भूमि का सेवन देव, असुर, ऋषि और मनुष्य करते आये है.

चेदि

चेदि देश का नाम ऋग्वेद में आया है। [मंडल आठवां ५-३७-३९] उसकी सीमा चंम्बल [चर्मनवती] जमुना के दक्षिणी किनारे किनारे आग्नेय में चित्रकुट और दक्षिणमें मालवा प्रान्त और बुंदेलखंड के पहाड़ों तक फैला हुआ। हेमचन्द्र के अभिधान चिंतामणि में डाहल डभाला और चेदि देश एकही देश है ऐसा लिखा है. चेदि देशके नगरोंमें त्रिपुरी और माहिष्मती के नाम है (महेश्वर नर्मदा किनारे मान्धान से ३७ मील)

महाभारत में चेदी के राजा शिशुपालका आख्यान प्रसिद्धही है। राजा नलनें जब दमयंतीको छोड़ दिया था तब दमयंतीने

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चेदी नरेशका आश्रय लिया था । महाभारतमें चेदिराजको ' दम घोष का पुत्र बताया है परंतु पुराणोंमें कुशिक का पुत्र कहा है। दोनोंमें यदु के छोटे पुत्र क्रोष्ट्री का वंशज कहा है जिससे कि यादव वंशका प्रारम्भ हुआ। चेदी के वे राजालोग जिन्होंने कि पूर्वीय नर्मदापर सैंकडों वर्ष राज्य किया वे अपनेको यदुका वंशज बतलाते हैं। कार्तवीर्य और हैहय इनके पुरखा, थे इनके शिला लेखोंमे सहस्त्रबाहु कार्तिवीर्यार्जुन के वंशज होनेका उल्लेख है। परंतु मुसलमानों के कई सदी पहिले चेदी देशमें जिस राजवंशनें राज्य किया वे कालचुरी थे। इन्होंनें अपना सन २४८ में सम्बत भी चलाया था, जिसे कलचुरी अथवा चेदी सम्वत कहते थे। इस चेदी देशकी राजधानी त्रिपुरी ही थी। बाणके हर्षचरित्रमें भी चेदि का उल्लेख है । हेम कोशमें त्रिपुरको चेदि कहा है।

चेदि देशका पुराना नाम दाहाला देश अथवा दभाला लिखा है। यह शब्द दशार्ण देशका अपभ्रंश मालूम होता है। दशार्ण नाम की सागर जिलेमें एक नदी है जिसे आजकल धसान कहते है। ७ वी ८ वी सदीमें त्रिपुरीमें किसका राज्य रहा इसका पता अभी तक नहीं लगा। इस की राजधानी त्रिपुरी थी। डॉ. भांडारकर के कथनानुसार यहां शके ९५० मे राजा कर्ण राज्य करते थे। चेदि देश प्रायः आधुनिक मध्यप्रदेश ही है। कालाचुरी अथवा हैहयवंश के राज्य काल में इस प्रदेश की अच्छी उन्नति हुई। सन ८९५ में हैहय कोकल्ला की मृत्यु हुई। वह १८ पुत्र छोड मरा था। त्रिपुरी मे सन १०४२ मे ये राज्य अपने उन्नति के शिखरपर था। रींवां के बघेला राजा के हाथ इस का पतन सन ११८१ ई. में हुआ (मंडला गजटीअर)। संभव है कि कोकल्ल देव कलचुरी राजाका समय लगभग सन ८७५ है। कोकल्ल देवके

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१८ पुत्र थे । कोकल्लका विवाह चंदेलोंमें हुआ था । सबमें बडा जो त्रिपुरी के सिंहासनपर सन ९०० के लगभग बैठा उसका नाम मुग्धतुंग था । धवल के नामसेभी वह प्रसिद्ध था । इसके वंशके द्वितीय युवराजदेवके समय में मालवाके राजा वाक्‌पति मुंज ने त्रिपुरीपर हमला करके युवराज देवको पराजित किया। इस वंशको अन्यप्रसिद्ध राजा गांगेयदेवने (विक्रमादित्य) १००० से १०४१ तक राज्य किया। फिर कर्ण और गयाकर्णने राज्य किया। गयाकर्ण सन ११५१ मे गद्दीपर था। कलचुरि वंशका अंत सन १३०० इ. में हुआ। इनकी शासन पद्धति उत्तम थी। ये राजा शैव मतानुयायी थे। एक मठको लाख गांवकी जाहागिरदारी दी थी। इनके सामाजिक तथा धार्मिक विचार उदात्त थे और वे सब लोगोंको सम दृष्टीसे देखते थे। पाषाणश्शिव संस्कारात् भुक्तिमुक्तिप्रदोभवेत्। पाषाणश्शिवतां याति, शूद्रस्तु न कथं भवेत॥ संस्कारसे पाषाणभी भुक्तिमुक्ति देनेवाले शिवजी हो जाते है तो फिर शूद्र क्यों शिव नही हो सकता। इस श्लोकमें 'शिव' शब्द द्वय अर्थी है । महादेव और पवित्र के अर्थ मे शिव का उपयोग किया है।

मठोंके अधिकारी पाशुपत सम्प्रदायके शैव थे । यह गोलकी मठसे सम्बन्ध रखते थे इस पंथ के प्रचारक दुर्वासा मुनि समझे जाते थे। गोलकी मठके प्रथम महंत कालामुख शाखाको पालते थे। अर्थात बाममार्गी थे। ये खोपडेमें भोजन करना; शव की राखसे शरीर लीपना; राख खाना; दंडधरना, मदिरा का प्याला पास रखना और योनिस्थित देवका पूजन करना इन ६ प्रकारोंको भक्तिमार्ग मानते थे। आश्चर्य की बात है कि तीस चालीस वर्षपूर्व भी जबलपूर शहरमें बाममार्गी लोग मिलते थे जिस मठवालोंको ३ लाख के गांव दिये थे उनका

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रताप भारत वर्षमें कई प्रांतोमें फैला था। उनके सैंकडो चेले थे इनके आशीर्वाद की लालसा राजाओंतकको भी रहती थी इनमें के एक महन्तने निजाम राजान्तर्गत वारंगल देशके राजाको दीक्षा दी थी। चोल, मालव और कलचुरी राजाओंको भी शिष्य बनाया था। ये महंत स्वार्थी नहीं होते थे। इन्होंने सब जाति के लोगोंको सदावर्त देनेका प्रबन्ध किया था। अस्पताल, सूतिकागृह, और महाविद्यालय स्थापित किये थे। काश्मिरसे गवैय्ये बुलाकर संगीत और नृत्य कलाको भी उत्तेजन देते थे। यह सन १२५० की बात है।

त्रिपुरी के निकट गोपालपुर ग्राममें जो मूर्तियां मिली है उनमें बौद्ध धर्मका बीज मंत्र लिखा है। त्रिपुरीके मंदिरोंके भग्नावशेष जबलपूरकी सडकों और पूलों में लगादीये गये हैं। इनके बनाए हुए मंदिरोंके द्वारोंपर गजलक्ष्मी की मूर्तियां बहुधा बनाई जाती थी। ये लोग विद्वानोंको भी बहुत अन्न देते थे। कलचुरी राजाओंने अपना घर और केन्द्र त्रिपुरी [तेवर] को ही बनाया परंतु इनका सूर्य तेरहवी सदीमें अस्त हो गया।

चंदेलों, पवारों, बघेलों और गोंडों के आक्रमण से कलचुरी राज्य का पतन हो गया। जबलपुर जिल्हे में चंदेलों का भी राज्य रहा। गोंड लोग कलचुरियों के घर के भेदिये थे। उन्हों ने दंगा बखेडा करके जबलपूर और त्रिपुरी के बीच में अपनी नई राजधानी गढ बनवाकर स्थापित की जिसे साम्प्रत गढा कहते हैं [जबलपूर से ३ मील और त्रिपुरी से ४ मील]। गोंड वंश के मूल पुरुष मदनसिंहने अनगढ चट्टानोंपर एक महल बनवाया था जो मदनमहल के नाम से प्रसिद्ध है। यह गढा गांव के पास जबलपुरसे ३ मील पर है। गढा के निकट कटंगा पर्वत है जिससे उसका

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम मुसलमानों के समय में गड्कटंगा पडा। जब गोंड राजा-ओंने मंडला को राजधानी बनाई तबसे उसका नाम गढामंडला चलने लगा। गोंड वंश के संग्रामशाहने अपने नाम की सोने की पुतलीयां चलाई थी। सन १५१३ इसवी के लगभग संग्रामशहाने १४८० से १५३० तक राज्य किया। संग्रामशहा ने बावन गढ बनवाये हैं। सब गढों के मातहती में ३५४८० गांव थे। गढा में संग्रामशहानें 'संग्रामसागर' नामक तालाब बनवाया। इसके बीचमें एक मंदिर है, बाजना मठ में यंत्र खुदे हुए हैं वहीं पर भैरव का बाजना मठ है। इसके इष्ट देव भैरव ही थे। एक तांत्रिकने आकर इन भैरवजीको संग्राम शहा का अर्धरात्रीको बली देनेका मनसुबा किया था। परन्तु राजाने ऐन वख्त पर ताड लिया और तांत्रिक का ही बलि-दान चढा दिया। संग्रामशहाने ५० वर्ष राज्य किया उसके पश्चात दलपतशहा राजा हुआ वह सिंगोर गढ में रहता था। दलपतशहा का विवाह मोहेबे के चंदेल राजा की रुपवती पुत्री दुर्गावती से हुआ था। विवाह के ४ वर्ष पश्चात दलपतशहा देव लोक सिधारे। राणी दुर्गावतीने पंद्रह वर्ष राज्य किया। फडा माणिकपुर के नवाब आसफखां ने सन १५६४ इसवी में ६ हजार सवार और १२ हजार पैदल सिपाही लेकर सिंघौर गढ पर चढाई की। इस युद्ध में रानी दुर्गावती के शूरता का हाल और उसने कैसे वीरगति पाई यह इतिहास में प्रसिद्ध ही है। रानी दुर्गावती के गिरने के स्थान पर बरेला के निकट एक चबुतरा बना है। बरेला मंडला सडक पर जबलपुरसे १० मील है। अकबर बादशाहने गढा के राज्य पर अपनी प्रभुता जमाई और अपनी तरफसे दलपत के भाई चंदुशहा को गढे के गद्दी पर बिठा दिया। तत्पश्चात प्रेमनारायण गद्दी पर बैठे

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और उसके लडके हृदयशाह और 'ओरछा' बुंदेलों से लडाई हुई थी। हृदयशाहने ७० वर्ष राज्य किया। इसके कुछ पीढीके बाद आपसमें गद्दी पर बैठने का झगडा खडा हो गया। सन १७३१ इ. के बाद पेशवाओंने गोंडोके राज्यमें हस्तक्षेप करना प्रारम्भ किया। मंडला पर चढाई करके पेशवाने गोंड राजा महाराजशाहको मार डाला और उसके बडे लडकेको गद्दीपर बिठा चार लाख रुपया सालाना चौथ मुकर्रर कर दी। नागपूरके भोंसलोंने नरहरशाहको गद्दीसे उतार दिया। सागरके मरहटोंको यह बात पसंद न आई! उनमें और गोंडराजाओंमें हमेशा झगडे हुआ करते थे सन १७८९ इ. में गढामंडलाके गोंडोके राज्य की समाप्ति हो गई। अकबरके समयमें गढा के जंगलोंमें जंगली हाथी पाये जाते थे जो अकबर बादशाहको कर में दिये जाते थे।

सागरके पंडित पूनाके पेशवाओंके प्रतिनिधि थे। गढाके अंतिम गोंड राजाको कैद करनेके पश्चात इन्होंने त्रिपुरी का सदर मुकाम जबलपुर बनाया। जहां आजकल लाटगंज (जवाहरगंज) है। वहां एक छोटासा किला बनवाया था। इस किलेकी जगह आज लाटगंज बस गया है। जबलपुर जिले का शासन मरहटोंके हाथमें १७ वर्षतक रहा। सागरके मरहठोंके अंतिम प्रतिनिधि पं. रघुनाथराव आप्पासाहेब 'सागरवाले राजा' इस नामसे प्रसिद्ध थे और जबलपुरमें रहते थे। इनको अंग्रेज सरकार ३ हजार रुपिया सालाना पोलिटिकल पेन्शन देती थे। १९ दिसम्बर सन १८१७ को जबलपुरमें अंग्रेजोंका और स्थानिक राज्यकर्ता जिन्होंने ३ हजार योद्धाओं की सेना एकत्रित की थी, युद्ध ठना। दोनों तरफसे तोपे चली, दूसरे दिन प्रातःकाल जबलपुरकी गढी और शहर छीन लिये तबसे आजतक जबलपुर ब्रिटीश सेनाका

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निवासस्थान है । सन १८२० इ. में १२ जिलोंकी एक कमिश्नरी बनाई गई । इसका नाम सागर और नर्मदा टेरेटरीज रखा गया जबलपुरमें गव्हर्नर जनरलका एक एजंट रहने लगा। सन १८३५ से १८६१ तक जबलपुरसे केन्द्र हटानेका निष्फल प्रयत्न होता रहा। अन्तमें सन १८६१ में मध्यप्रदेश की रचना हुई और तबसे जबलपुर ५ जिलों के कमिश्नर का हेडक्वार्टर है ।

सन १८५७ इ. में जबलपूर जिलें में भी गदर हुआ था । जबलपुरसे २३ मील कटंगी के पास युद्ध हुआ था । गोंडराजा शंकरशाह और उसके लडके रघुनाथशाह बागी ठहराये गये थे और दोनों १८ सितम्बर को तोपसे उडा दिये गये थे । कटंगी लढाई २६ सितम्बर के करीब हुई थी। जबलपुर जिलेके अन्तर्गत विजयराघवगढ़ के राजा भी बद्दल गये थे । इनके पास २०-३० तोपें थी । कई निष्फल प्रयत्न करने के बाद यहां के राजा पकडे गये । बर्गी के ओर भी बागिओंका जोर था । फरवरी सन १८५८ के बाद जबलपूर जिलेमें गडबड बंद होगई । और १ ली अगस्त के भीतर पूर्ववत शांति स्थिर होगई ।

महाकोशल

अयोध्या अथवा अवध का पुराना नाम कौशल देश था। इसके दो विभाग थे उत्तरीय कोशल और कोशल। उत्तरीय कोशल की राजधानी श्रावस्ती थी और कोशलकी कुशावतीनगरी जिसको रामचन्दजी के पुत्र कुशनें बसाया था। बुधके समय में (ईसासे ५।६ वी शताब्धि पहिले) कोशल एक प्रभावशाली राज्य था जिसमें बनारस और कपिलवास्तु भी सामील थी। उस समय

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उसकी राजधानी श्रावस्ती थी। ईसा के ३०० वर्ष पूर्व यह मगध राज्य में शामिल कर लिया गया, जिस की राजधानी पाटलीपुत्र या पटना थी। गोंडवाना और मध्यप्रदेशका पूर्वीय भाग [छत्तीसगढ] को दक्षिण कोशल कहते थे और ईसीका नाम महाकोशल है। कभी कभी महाकोशल की सीमा दक्षिण और पश्चिम की ओर दूरतक पहूँच गई थी। ईसाकी ग्यारही और बारहवी शताब्दि में महाकोशल की राजधानी रतनपुर थी। इसके पहिले महाकोशलकी राजधानी चिरायु थी। जिन्होंने बौद्धोंका महायान पंथ चलाया और वैद्यक की सुश्रुत संहिता बनाई उन नागार्जुनके सम्बन्धमें भी चिरायु का उल्लेख आया है। नागार्जुनका काल ईसाके दूसरी शताब्दि का बताया जाता है। बुद्धकालमें विदर्भ अर्थात बरार को भी दक्षिण कोशल कहते थे (कनिंगहॅम)

वत्सके राजा उदयनने दक्षिण कोशल को जीता था ऐसा रत्नावलीमें लिखा है। मुसलमान ऐतिहासिकोंने गोंडवानें को गडकटंग लिखा है। प्रसिद्ध रानी दुर्गावती का राज्य इस गोंडवानेपर था। धौली के अशोक के शिला लेखमें दक्षिण कोशल का नाम आया है। उडीसा के राजा कोई कोई कोशल राजाओं के आधीन थे। रतनपुर का पुराना नाम मणिपुर था, मंडल का माहिकमति और लाँजीका चम्पानट्टु था। गढामंडला के हैह्यवंशीयोंकी ये राजधानियाँ थी।

कोशल देश की सीमाः—महानदी और उसकी सहायक नदीयां उत्तर में, नर्मदा के उद्गम स्थान से दक्षिण मे महानदी के उद्गम स्थान तक, पश्चिम मे बेनगंगा और पूर्व मे हसदा और जोक नदीयां। श्रीपुर, (सिरपुर महानदी के किनारे रायपूर जिल्हे मे)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उसकी पुरानी राजधानी थी। कोशल देश के नगर रतनपुर चांदा आदि थे।

कोशल देश विंध्याचलवर्त्ती है. इस मे बरार और गोंड-वाना भी शामिल थे इस की उत्तरीय सीमा उजैन—पश्चिममे महाराष्ट्र—पूर्वमे उडीसा और दक्षिण मे आन्ध्र और कलिंग के देश। ऐसा उल्लेख मिलता है कि कोशल के राजा ने शाक्यों को दासी कन्या के कारण निकाल दिया था।

त्रिपुरी

पुरातन कालमें गंगाजी के पूर्व कोशल लोगोंने जो देश बसाया था वह अवधके समीप था। विदेह लोगोंने जो देश बसाया था वह उत्तरीय विहार में था और काशी लोगोंका बनारसमें। [आर. सी. दत्त का पुरातन इतिहास पान १३१] इससे भी पहिले का बृतान्त महाभारत पुराणादिओंमें मिलता है। त्रिपुरीके राज्य में पुष्य नक्षत्रमें बसाये हुए तीन पुर थे। एक बहुत उंचाई पर, दुसरा थोडे उंचाईपर और तिसरा समभूमि में। इस राज्यका राजा तारकासुर था। वह शिवजी के पुत्र स्कन्ध सेनापतिके हाथसे मारा गया। तदनन्तर उसके विद्युन्माली तारकाक्ष और कमलाक्ष नामक तीन पुत्रोंने मयासुरकी सलाहसे ऐसी तीन पुरोंकी रचना की कि यदि शत्रु उसमें प्रवेश करें तो वहीं जलकर भस्म हो जावे और जब-तक ये तीनोंपुर एक सूत्र में न आवे तब तक अभेद्य रहें। देवताओंने यह बात बिना जाने जब असुरोंकी त्रिपुरीपर हमला किया उस समय बहुतसे देव जल गये थे और बहुतसे भाग गये फिर महादेवजी की सहायतासे इस त्रिपुरी को दग्ध कर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सके। कर्ण ने दुर्योधनके लिये भारतखण्ड के जो राज्य जीते थे उसमें पहिले नैपाल के राज्य का वर्णन है फिर पूर्वकी ओरके अंग, वंग, कलिंग, मिथिला, मगध आदि राज्योंका वर्णन है, तत्पश्चात पूर्वकी दिशाको छोडकर कर्ण वत्सभूमि में पहुंचे, उसको भी जीतकर मोहनपूर, त्रिपुर और अयोध्या आदि के राजाओं को जीतनेका उल्लेख है (महा भारत वनपर्व अ. २५४) ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी त्रिपुरी का उल्लेख है। लिंग पुराणोक्त कथासे यह भी पता चलता है कि त्रिपुरी के लोगोंका ओर हमला करने वालोंका जब तक एकही धर्म था, त्रिपुरीवालोंकी हार नहीं हुई। हमला करनेवाले शैव लोगोंने त्रिपुरी के लोगों को बौद्ध धर्म ग्रहण करनेके लिये बहकाया और जब यह फूट का बीज फैला तब त्रिपुरी के लोगोंका पतन होनेमे देर नहीं लगी। पुराणोंमे महादेवजीसे त्रिपुरासुर वध की कथा प्रसिद्ध ही है। मत्स्य पुराणमें त्रिपुर को वाणराजाकी राजधानी बताया है। इसी वाणराजाकी कन्या उषा का विवाह श्रीकृष्णचन्द्रजीके पौत्र अनिरूद्ध के साथ हुआ था। इस तरह से त्रिपुरी शोणित-पुर था। चेदिके कलाचुरी राजाओंने ई० २४८ में अपने नामसे सम्वत चलाया था। इसका नाम चेदिनगर भी था। राजा कोकल्लदेव और चेदीके कलाचुरी राजाओंकी राज-धानी इस त्रिपुरमें ९ शताब्दि तक रही

किसीभी ग्रन्थोंसे इस बातका पता नहीं लगता कि त्रिपुरीके तारकासुरके लडकोंकी त्रिपुरीके दूसरे दोपुर आजकल कौन कौन है। केवल त्रिपुरी तेवर है यही पता चलता है। कई लोगोंका कथन है कि नर्मदाके किनारेका लम्हेटा दूसरी पूरी है। इससे अनुमान होता है कि तेवर और लमेटाके समीप ही प्रायः नर्मदाके किनारे पर्वत शिखरपर तिसरीपुरी रही होगी। जिसके भग्नावशेष

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अत्र नहीं मिलते। यह त्रिपुरी–कामरुप (आसाम) की त्रिपुरी त्रिपुरा (टिपरा) से भिन्न है (नन्दोलाल. डे और महाभारत)। इस को त्रयपुर और त्रयपुरी भी कहते है (भुवन कोशांक)।

१५०० वर्ष पुरानी वराह मिर्हकी बृहत संहितामें त्रिपुरीका उल्लेख आग्नेय के देशोंमे आया है। मध्यप्रदेशके उत्तरीय भागमें जो जबलपूर मंडला, दमोह और नरसिंहपूर के जिल्हे हैं वे प्राचीन कालमें चेदि देश या दाहल कहलाते थे। इसके शासनकर्ता कल्चुरि रजपूत थे। अत्रि और यदुके वंशज होनेसे वे अपनेआप को चंद्रवंशी कहते थे। यदुसे हैहय का जन्म हुआ, हैहय के नामसेही इस वंशका नाम हैहय वंश पड गया। हैहय से कार्तवीर्यार्जुन का जन्म हुआ। इस वंशकी राजधानी अथवा मुख्य नगर यही त्रिपुरी थी। इस वंशके राज्य-का शासन काल सन २४९ से ११८० तक था।

अशोक का राज्य यहां पर लगभग ईसाके पूर्व २३२ सदी तक रहा। पुष्य मित्र (मौर्य) का १८४ बी. सी. तद्पश्चात् शुंग वंश का प्रारंभ हुआ २७ बी. सी. मे आन्ध्र अथवा शातवाहन राज्यवंश का राज्य हुआ। इनका राज्य ४५० वर्ष अर्थात् सन २३६ ई. तक रहा। गुप्त लोगोंका राज्य सन ३०८ मे चन्द्रगुप्त ने प्रारंभ किया–उसके उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त ने महानदी के समीपीय और मध्यप्रदेश पर हमला किया था। परिव्राजक महाराजा-ओंका राज्य त्रिपुरी में सन ४७५ और ५२८ के बीच रहा।

त्रिपुरी में बालसागर नामका बडा तलाव है। बीच में द्वीप और उसमें मंदिर है। गांवके पश्चिमी सीमापर बडे वृक्षके नीचे बहुतसी टुटी फुटी मूर्तियां है। यह करणबेल समीप के गावसे एक मील लगा है। यहां एक वज्रपाणी बुद्धकी मूर्ति है और एक चतुर्भुजी नर्मदाकी भी मूर्ति है। जिसके नीचे मगरका वाहन है। एक

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३॥ फूट उंची द्वादशभूजा की त्रयमस्तकी मूर्ति दत्तात्रय की मालूम होती है। कुछ नग्न मूर्तियाँ है। दिगाम्बरी जैनों की आदिनाथादिकी ३ मूर्तियाँ है।

वसिष्ठ संहिता अ. १४–१५ में इस प्रकार कथा है कि वशिष्ठजीने कहा—हें रामचन्द्र! प्राचीन कालमें देवोंने दैत्योंका पराभव किया तब दैत्य मयासूर के पास शरण गये और मयासूरने दैत्योंके कल्याण के लिये मायासे सब प्रकारके शस्त्रोंसे परिपूर्ण तीन अभेद्य नगर निर्माण किये। फिर दैत्योंने देवोंको पराभूत किया तब सब देवतागण शंकरजी के शरण गये। देवताओंका हाल सुनकर शंकरजी क्रोधित हुए और उन्होंने आठ भैरव निर्माण किये। ये सब भैरव बडे भयानक रुप धारण करनेवाले थे ८ भैरव और ११ रुद्रोंसहित देवोंको लेकर शंकरजी त्रिपुराधिपतिसे लडने गये। दोनों दलोंमें घमसान युद्ध हुआ। अन्तमें दैत्योंकी जीत हुई। सब देव भयसे भागने लगे। फिर सब देव ब्रम्हाजी और शंकरजी सहित भगवान् विष्णुके पास गये और फिर देवोंने एकत्रित होकर त्रिपुरीपर चढाई की। प्रथमतः विष्णु भगवानने गोकार रुप धारण करके कूपस्थित अमृत पी लिया और इधर देवोंने त्रिपुरसुंदरी नाम भगवती शक्तिका ध्यान करके दैत्योंपर हमला किया। घोर युद्धके पश्चात दैत्य हारकर मयासुर को अपना अगुवा बनाकर शंकरजी की शरण गये। श्री शंकरजीने मयासुर को पंचाक्षरी मंत्र देकर नर्मदा तीरपर तप करनेका आदेश दिया। मयासुरने तिलेश्वर तथा भैरवेश्वर तीर्थ में तप करके सिद्धि प्राप्त की थी।

नर्मदा

नर्मदाके दूसरे नामः—रेवा मेकलसुता सोमोद्भवा मुरला त्रिकाण्ड

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शेखर । इस पवित्र नदी के किनारे " भृगवत्रि श्रृंगाश्च वसिष्ठ कंका " ऋषि रहेते थे मान्धता के समीप च्यवन ऋषि खेती करते थे स्कंद पुराणान्तरगत रेवाखंड महात्म्य में सभी घाटों का सविस्तर वर्णन किया है मायानंद चैतन्यकृत " नर्मदा पंचाग " में भी प्रत्येक घाट का वर्णन ओर महात्म्य सिलसिलेवार दिया हुआ है यहां लोगोंका दृढ विश्वास है कि चिरकाल तक जो हड्डी आदि वस्तु नर्मदा में पडी रहे वह पत्थर हो जाती है । सितम्बर १९२६ मे नर्मदा का बडा भारी पूर आया था जो कि हुशंगाबाद तक जोरो से था, इस में मंडला बह गया था । तदनंतर दूसरे साल हुशंगाबाद से आगे भरोच तक आया था

तिलवारा घाटपर मकर संक्रांति का महात्म्य है । त्रिपुरी और जबलपूर के समीप जितने घाट है उन में तीर्थ स्नानके तोरपर तथा सबमें अच्छा दृश्य और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण भेडाघाट मुख्य है तदनन्तर लम्हेटाघाट का नम्बर है, जिल्हेरी घाट पर मुरदे जलाये जाते है. जबलपुरसे सबसे समीप ५ मील पर ग्वारीघाट होनेके कारण तथा पक्की सडक और रेल होनेंके कारण जबलपूर के लोग ग्वारी घाट अधिक जाते हैं.

नर्मदाके किनारे के सुंदर सुंदर रमणीय प्राकृतिक शोभासे पूर्ण ऐसे अमरकंटक, भेडाघाट, मान्धाता, माहेश्वर आदि अन्य घाट भी प्रेक्षणीय है ।

भेडाघाट

भेडाघाट जी. आइ. पी. का रेल्वे स्टेशन है। वहां से भेडाघाट ३ मील है । तेवरसे सात मील सडकके रास्ते नैऋत्य दिशाकी ओर नर्मदा का भेडाघाट नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है । करनबेल से जो एक छोटीसी नदी आती है उसके और नर्मदाके

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संगमपर यह स्थान है। संगम के उपर ही संगममर्रकी चट्टानें नर्मदाके दोनों बाजू दिवालकी नाई सीधी खडी हुई है। नर्मदा और छोटी नदीके बीच एक पहाडी है जिसके चोटीपर एक गौरीशंकर का मंदिर है और उसके आसपास गोलाकार चौसठ जोगिनीका एक मठ है। उसमें ७९ खंड मूर्तिओंके लिये बने हुए हैं। यह इमारत बहुत पुरानी है। नर्मदासे इस मंदिर को पहुँचनेके लिये एक अच्छा सोपान बना हुआ है; दूसरी बाजू को भी पहाडी से उतरने को और नर्मदा जानेको रास्ता है। इस मंदिर परसे प्राकृतिक सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता है। दक्षिणके तरफ दृष्टि डालनेसे नीचेकी ओर नर्मदाका नीलजल स्तम्भितसा दिखता है। जलके दोनों बाजू सफेद शुभ्र स्वच्छ संगमर्मरकी चट्टानें सीधी खडी हुई हैं जिनके बीचमेंसे नर्मदा बहतीहुई दिख पडती है। वायव्य की ओर सघन जंगल है; परंतु पूर्व की ओर जबलपुरकी तरफ मीलों दूरतक नदी दिख पडती है। बौद्ध भिक्षु प्रायः स्तूपके लिये ऐसाही स्थान चुनते थे। ब्राह्मणोंके लिये तो नर्मदाका संगम पवित्र है ही। इस संगमपर स्नान करनेसे पुण्य होता है ऐसा माना गया है। ब्राह्मणोंको भूमिदान करनेके अर्थ राजा गयकर्णने, उसकी रानी और राजपुत्र अपने प्रधानमंत्रि, सेनापति, खजांची और पुरोहितादि राजकर्मचारिओं के साथ यहां स्नान किया था। राजानरसिंहदेवकी विधवा रानी गोशळा देवीने इसी तीर्थपर स्नान करके चोरलगिर नामक अपना गांव एक ब्राह्मणको दान दिया था।

गौरी शंकरका मंदिर चौसठ जोगिनीके हाते के बीचोंबीच नहीं है। मंदिरकी कुर्सी वगैरा नीचे का भाग पुराना मालूम होता है और जैसा का तैसा बना हुआ है। उपरी भाग और सभा मंडप पीछेका बना हुआ मालूम होता है। यह मंदिर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२५ फूट लंबा २२ फूट चौडा है। गौरी शंकरजीकी मूर्ति पार्वतीसह नंदीपर स्थित है। यह ४ फूटसे ज्यादा उंची और पौनेतीन फूटसे कुछ कम चौडी है इस मंदिरके भीतर पांच और मूर्तियाँ है।

१ लक्ष्मीनारायण गरुडपर बैठे हुए है। यह मूर्ति गहरे नीले रंग के पत्थर की है।
२ सूर्य अपने सारथी अरुण के साथ घोडोंके रथ को खडे हांक रहे है।
३ हरगौरी की छोटी मूर्ति।
४ गणेशजी की छोटी मूर्ति।
५ चतुर्भुजादेवी की मूर्ति; इनके मुकुट में छोटीसी बुद्धकी मूर्ति बनी हुई है।

दुर्गादेवीकी परिचारिकाओंको जोगिणी कहते हैं इनकी संख्या ६४ है। इनमें अष्टशक्तिकी आठ जोगिणी हैं, कुछ चामुंडाकी मूर्तिया हैं, तीन नदिओंकी मूर्तिया हैं। गंगाके नीचें उनका वाहन मगर बनाया है; जमुना के नीचे कछुवा और सरस्वती के नीचे मोर बनाया हुआ है। ६४ जोगिनी का घेरा बाहरसे १३० फूट लंबा है और भीतर भीतर ११६ फूट है। इसमें ८४ खंड है। तीन खंड द्वारके लिये छोड दिये गये। शेष ८१ मूर्तियां स्थापन करनेके लिये हैं। इसमें जो मूर्तिया है उसमें कुछ खडी हुई और कुछ बैठी हुई है। बहुतसी चतुर्भूज मूर्तिया हैं। इस घेरेमें:—

१ अष्टशक्तिकी मूर्तियां ८
२ गंगा जमुना सरस्वती नदियोंकी ३
३ काली आदि देवियोंकी नृत्यकरती हुई मूर्तियां ४

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४ शिव और गणेश की मूर्तियां	२
५ चौसठ जोगिनी	६४
६ द्वार की जगह	३
जोड़	८४

भारत वर्ष में इस प्रकार के पांच छः ही मन्दिर पाये जाते हैं। एक मन्दिर चौसठ जोगिनीका खजुराहेमें है परंतु वह चौकोन है। ये जोगिनी युद्धमें खप्पर लेकर रक्त प्राशन के लिये प्रस्तुत रहती है और आनंदसे नृत्य करती है। रुद्रोप निषदमें जोगिनीयोंकी उत्पत्ति बतलाई है कि युद्धमें जालन्धर के मारे जानेपर शिवजीनें ध्यानसे इनका आव्हान किया और आदेश दिया कि इस दैत्यका माँस भक्षण करो, रक्त पिओ। इसी कारण चौसष्ठ जोगिनीकी मूर्तिओंमिसे कई का मुँह खुला बनाया गया है और दांत निकले हुए है। पूर्व द्वारमें गणेश की मूर्ति से आरम्भ करके दक्षिणकी ओर चलते समय निम्न लिखित मूर्तियां मिलती है।

१ छत्रसंवरा, २ अजिता, ३ चंडिका, ४ आनन्य, ५ ऐंगिनी, ६ ब्राह्मणी, ७ माहेश्वरी, ८ टकारी, ९ जयनी, १० पद्महस्ता, ११ हंसिनी, १२, १३, १४ नामगुम, १५ ईश्वरी, १६ नाम अस्पष्ठ, १७ इंद्रजाली, १८, एहनी, १९ और २० नामगुम, २१ एंगिनी २२ उत्ताला, २३ नालिनी, २४ लम्पटा, २५ दुदुरी, २६ झथामाला, २७ गान्धारी, २८ जान्हवी, २९ डाकिनी, ३० वंघनी, ३१ दर्पहारी, ३२ नाम अस्पष्ठ, ३३ लंगिनी, ३४ जहा, ३५ शाकिनी, ३६ घंटाली, ३७ ठठरी, ३८ नाम गुम, ३९ वैष्णवी, ४० भीषणी, ४१ सवरा, ४२ क्षत्रधर्मिणी, ४३ नाम खण्डित ४४ फणेन्द्री, ४५ वीरेन्द्री ४६ ठकिनी, ४७ सिंहसिंहा, ४८ झापिनी, ४९ कामदा, ५० रणाजिरा,

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५१ अन्तकारा, ५२ नाम गुप्त, ५३ एकादी, ५४ नंदीनी ५५ बीभत्सा, ५६ वाराही, ५७ मंदोदरी, ५८ सर्वतोमुखी, ५९ थिरचित्ता, ६० खेमुखी, ६१, जाम्बवती, ६२ नाम गुप्त, ६३ ओंतारा, ६४ नाम गुप्त, ६५ यमुना, ६६, ६७, नाम गुप्त, ६८ पांडवी, ६९ नीलाडम्बरा, ७० नामगुप्त, ७१ तेरमवा, ७२ चंडिनी, ७३ पिंगला, ७४ अहखला, ७५, ७६ नाम गुप्त, ७७ जटरवादेवी, ७८ नाम गुप्त और ७९ रघाली देवी,

कालिका पुराण और दूर्गा पूजा पद्धति इनमें भी चौसठ योगिनियोंकी नामावली मिलती है परंतु दोनों नामावलियोंमें साम्य नहीं है, कुछ थोडे नामोंके अतिरिक्त अधिकांश नामोंमें वैभिन्य ही प्रतीत होता है।

यहां भृगु नामके ऋषि रहते थे इसीसे इस स्थान का नाम भेडाघाट पडा है और कोई कोई यह भी भेडाघाट नाम की उत्पत्ति बताते है कि यहां बावन गंगा और नर्मदा का भेड याने मेल (संगम) हुआ है अतः इसका नाम भेडाघाट रखा है। यहां नर्मदा नदी सौ सौ फूट उंची संगमर्मर की चटानोंको काटकर बहती है अतः समीपवर्ती सृष्टि सौंदर्य बडा ही नयन मनोहर प्रतीत होता है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य देखकर कप्तान फारसिथ तो ऐसा लिख गये हैं। कि " कौन ऐसा पुरुष होगा जो भेडाघाट देखकर संगमर्मर की चट्टाने भूल जाय "। इन खडी चट्टानोंके बीचमें लोगोंने तीर्थस्नान बना रखे हैं उनमें से एक सूर्यतीर्थ है, कहींपर हाथी के पैर बत- लाये हैं, कहीं घोडेके। कहीं कहीं दोनों बाजूकी चट्टाने इतनी निकट पडती है कि लोगोंकी बताई हुई बंदर कूदने की बात सत्य मालूम पडती है और शायद बंदर कूद जानेसे ही इस स्थल का नाम 'बंदरकूदनी' रखा गया। यहां और एक स्थल

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है जिसे स्वर्गदार कहते है और इसके समीप ही जनेऊधारा है जहां नदी की धारा बहुत पतली हो गई है। इस मनोहर स्थान में यदि किसी बातका भय है तो सिर्फ भंवर मखियोंका जो एक बार पीछा करनेपर बिनाप्राण लिये नहीं छोडती। अद्यावधि कतिपय मनुष्योंको इन्होके द्वारा अपने प्राणोंको खोना पडा अतः जिन्हे यह नितान्त रमणीय स्थल देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ हो तो उन्हे इस बातकी अवश्य सावधानता रखनी होगी कि किसीभी प्रकार घी की बॉस या तमाकू का धूवाँ न होने दे। जनेऊधाराके ऊपर कुछ दूर पर धुआंधार नामक प्रसिद्ध प्रप्रात है। यहां पर नर्मदा की धारा कोई ३० फूट उँचाई से गिरती है जिससे नीचे क्षीरमंडल का दृश्य दिखाई पडता है। जलपतन के वेगसे जो जलकण उडते है वे धुआँ के समान दिखाई देते है अतः इस स्थान का नाम धुआँधार रखा गया है। इसी स्थानमें कुछ कुश कालीन मूर्तियाँ मिली है जिस पर के लेखसे मालूम होता है कि लगभग दो हजार वर्ष पहिले यहां पर महाराज भुवक या भुमक की लडकीने उनकी स्थापना की थी। बंदर कुदनी के इस विषयमें यह कथा प्रसिद्ध है कि पहाडी की एक बाजूसे एक बंदरीया नर्मदाके सकरे पाट के लांघनेमें दूसरी ओरके पहाडीपर न पहुंचकर किनारे के बांस भिडेमें उसका सिर फँस रहा और धड नर्मदा जलमें गिरा। नर्मदा जलके महात्म्यसे दूसरे जन्ममें वह काशीकेराजाकी कन्या हुई। इस कन्याका शरीर अतीव सुंदर था परंतु मुँह बंदरकासा था। इसपर राजाने ब्राम्हणोसे परामर्श किया उन्होंने उसके पूर्व जन्मका हाल बताया। यह सुनकर राजाने शोध कर के उस वानर का सूखा सिर बाँसोंमेंसे निकलवाकर राजाने नर्मदामें डाल दिया। तब उसकी

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कन्याका सिर भी सुंदर रुपवति कन्याकासा हो गया।

गौरीशंकर जी के मंदिर के विषयमें कथा है कि काशीके एक बणिक कन्याको नाग का गर्भ रहा इसपरसे उसके मातापितानें उस कन्याको निकाल दिया। तब उस कन्याने एक वृद्ध कुम्हारके यहां आश्रय लिया। जब उस कन्याको पुत्र हुआ तब उस पुत्रको कुम्हारने गोद ले लिया। उस दिनसे कुम्हारका भाग्योदय हुआ। जब बालक ७।८ वर्षका हुआ उस समय दिल्लीके राजाने काशीके राजासे कर वसूल करनेका तगादा भेजा। नर्मदाके दक्षिण तीर बादलगढ़तक काशीके राजाका राज्य था। उसी समय यह कुम्हार और उसका लडका मिट्टीके बर्तन लेकर वहां पर आया था। कर वसूलीका कोलाहल सुनकर इस बालकके मुँहसे यह वचन निकले कि कर न दिया जाय किन्तु लडाई लडी जाय। वहां जोशमें आकर कहते तो कह गया परंतु घर आकर उँचे स्वरसे रुदन करने लगा। उसी समय में गौरीशंकर नदीपर सवार होकर आकाशमार्गसे गमन कर रहे थे। गौरीजीको दया आई और उनके अनुरोधसे शंकरजीने उस बालक से पूंछा कि तूने अपने स्वतः करतूतसे कुछ काम किया हो और जिसको कि तू अपना कह सकता हो बता। उस पर बालकने उत्तर दिया कि मेरे तो मेरे बनाए हुए मिट्टीके खिलौने बहुत हैं। इसपर शंकरजीने उसे भस्म दी और कहा नर्मदा स्नान करके यह भस्म नर्मदाजलमें मिलाकर मंत्रोच्चार करके खिलौनोंपर प्रौक्षण कर देना किन्तु याद रखना कि यह नदी लांघनेमें फिर गल जायेंगे। गौरीशंकरजीके वरदानसे उन खिलौनोंकी जीती जागती पलटन हो गई। जिसकी सहायतासे उसने दिल्लीके राजाको हरा दिया। और दक्षिणकी तरफ कूच किया। ज्योंही नर्मदा लांघी त्योंही पलटन पानीमें

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

८८/८६

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

गलकर अदृश्य हो गई जिससे इस बालक को अपनी लापरवाहीपर बहुत पश्चात्ताप हुआ काशीके राजाने इस बालकको वादलगढका राज्य देदिया और शालिवाहन नागवंशीकी पदवी दी। ठीक जिस जगह जैसी अवस्थामें गौरीशंकरजीको नंदीपर जाते हुए देखा था उसी जगह उसने गौरीशंकरजीका मंदिर बनवाया। डॉ. भांडारकरनें ऐसी ही कथा अपने ग्रंथमें शालिवाहन और विक्रमादित्यके युद्धके विषयमें लिखी है.

लम्हेटाघाट

यहां इंद्रने तप किया था। घाटपर इंद्रकेश्वर शिवजी तथा अन्य देवताओंके अनेक रमणीय मंदिर एवं धर्मशालाएं हैं। कुछ दूर पश्चिमकी ओर नर्मदामें शनिकुंड नामका बडा कुंड है। घाटपर मंदिरोंके समीपही पिप्लाद ऋषिद्वारा स्थापित पिप्लेश्वर तीर्थ है और घाटके मध्यमें पीपलके नीचे शनि देवका मंदिर है। यह तीर्थस्थान अत्यंत रमणीय है। इसके विषयमें रे, खं अ. ६१ में कथा बताई है कि शनि बालकोंको न सतावें ऐसी प्रतिज्ञा मिथिलापुर निवासी याज्ञवल्क्य ऋषिने तपश्चर्या कर के शनि से यहां कराई थी. यहां दान तपादिका फल इस तीर्थमें स्नान करनेसे मिलता है। बालकोंको स्नान और शनिदेवका दर्शन करानेसे शनिदेव नहीं सताते।

तिलवाराघाट

तिलवारा नर्मदा नदी के किनारे जबलपूरसे ९ मील नैऋत्यमें है। प्रतिवर्ष तिलसंक्रान्तीका मेला १३-१४ जनवरी को यहां संक्रांति के समय एक दिन भरता है और लगभग ४०००० यात्रिओंका जमघट होता है। इसके पास रामनगर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नामका गांव हैं जिसमें स्लेट पत्थर की खदाने है। घाटके पास एक महादेवजीका मंदिर है। यहां इधर उधर भग्नमूर्तियाँ पाई जाती है। दो बुद्धकी मूर्तियां आज भी डिप्टी कमिश्नरके बंगले में मोजूद है। इनमूर्तिओंपर "ये धर्म हेतु प्रभवा हेतु तेषां तथा गतो ह्यवदत्। तेषांच यो निरोध एवं वादी महाश्रमणः" यह श्लोक खुदा है। इस स्थलका पुरानानाम तिलभांडेश्वर तीर्थ है। इसके सम्बन्धमें (व. स. अ. १३ में) यह कथा है कि एक समय भरद्वाज याज्ञवल्क्य, दुर्वास, बामदेव, वसिष्ठ, विश्वामित्र जमदग्नि इत्यादि श्महर्षि नर्मदा नदीकी परिक्रमाके लिये निकले जब मकर-संक्राती का समय उपस्थित हुआ तब आपसमें विचारने लगे कि मकर संक्राती के दिन नर्मदा तीरपर तिलदान का बडा महात्म्य है किन्तु हममेसे किसी के पास एक भी तिल नहीं है क्या किया जाय? तब सब ऋषिओंको चिंतित देखकर शंकरजीने कहा कि हे ऋषियों! बाणासु द्वारा स्थापित तिलभांडेश्वर लिंग साम्प्रत नर्मदा नदी में पडा है। उसपर तिलका चिन्ह है उसे निकालकर पूजा करनेसे तिलदानका फल प्राप्त होगा। तदनुसार ऋषिओंने लिंग निकालकर पूजा की।

ग्वारीघाट

यह स्थान जबलपूरसे ५ मील नर्मदा नदीके किनारे जी. एन. रेल्वेका एक स्टेशन है। जबलपूर शहर से सब में नजदीक नर्मदा का घाट यही है, तांगा मोटरोंकी यह पक्की सडक है यहां नर्मदा का पाट चौडा है। किनारेपर सुन्दर घाट बने है। वसंतपंचमी कार्तिकपौर्णिमा और ग्रहणके दिन बहुत से आदमी स्नान करने को जाते है। बरसात में बाढ के कारण लोगोंकी रफतार नाव से होती है। अन्य दिनो में नदी के पार आने जाने के लिये काम

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चलाऊ पुल बांध दिया है। इस गांव से ३ मील उपर खिरैनी घाटपरर नमर्दा और गौर नदी का संगम है। यहां का जबलपुर से ३ मील पर बादशाह हलवाई का मंदीर बहुत प्रसिद्ध है। यहाके अनेक मंदिर तथा घाटोंकी शोभा अच्छी है। सितम्बर १९२६ से जो नर्मदा को बडा भारी पूर आया था उस से यहां के कई मंदीर गिर पडे थे, एक की गुम्मट अभी तक उलटी पडी है।

त्रिपुरीके सन्निध के लोग, भाषा इत्यादि

जबसे मध्यप्रान्त बना तबसे जैसे दक्षिणी विभाग का केन्द्र स्थान नागपूर होगया तैसे ही उत्तरीय विभाग का जबलपुर (त्रिपुरी) है। मध्यप्रान्तके उत्तरके प्रान्तों का संबंध कम होते होते अब नहींसा होगया है। सागर जो मरहठोंकी राजधानी थी उसकी छाप जबलपुरपर पडी और अब जबलपुर का सिक्का इसके समीपीय जिले सागर, दमोह, सिवनी, मंडला, नरसिंगपुर, होशंगाबाद, बालाघाट तथा अन्य दो एक और जिलोंपर जमा है। छत्तीसगढ़के, रायपुर, बिलासपुर और द्रुग जिले बहुत कुछ इन्हीं जिलों के मेल जोल के है परंतु सम्बन्ध उतना गाढ नहीं है। इन तीन जिलोंमें चावल की फसल होती है। तो उनमें गेहूं की फसल बहुतायत से होती है गरीब लोग कोदो कुटकी खाते है या महुआ खाकर रह जाते है। यहां पर मालगुजारी बंदोबस्त है न कि रय्यतवारी। एक में तीर्थके तौर पर नर्मदा नदीका प्राधान्य है तो दूसरे में महानदी का। भाषा सभी की हिन्दी है परंतु छत्तीसगढ़ी हिन्दी स्वरुप भिन्न है।

उपरोक्त प्रान्त में गोंड बैगा और कोल बहुत है। राजपूत बहुत नहीं है। ब्राह्मण अधिक है। पंच गौडभी अधिक है पंचद्राविडोंमें महाराष्ट्रीय और इनेगिने गुजराथी है। परंतु इनकी

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आर्थिक दशा अच्छी नहीं है। संस्कृत विद्याका व्यासंग दिनोदिन घटता जाता है। वैदिक ब्राह्मण और भी थोडे रहगये। कर्मकांडी पुरोहित बहुत है। यजुर्वेदी ब्राह्मणोंकी अधिकता है। सरजूपारी और कनवाजिया (कान्यकुब्ज) यहां मिलते है। कुरमी और लोधी ये मुख्यतः खेती करनेवाले है। काछी बगीचेका काम करके जीविका करते है। महाकोशल उतना समृद्धवान देश नहीं है जितने कि अन्य। बनियोंमें परवार जैन धनी है। कायस्थ और ब्राह्मणोंको विद्या और बुद्धिका बल है परंतु नाऊ अपने को कम चतुर नहीं समझते। बडी भारी टहेलये की जाति ढीमरोंकी है। पद्धत के कायल और हाथोंके कायर सब जातियाँ इनसे दब जाती है। यहां की कोरी जाति समाज में उतनी उच्च श्रेणी की नहीं समझी जाती जितनी दक्षिण प्रान्त की। ज्यों ज्यों दक्षिण को जाओ त्यों त्यों अच्छूत जाति की संख्या अधिक मिलती है। महाकोशल में केवल भंगी बसोर और चमारही अच्छूत जातियां है। परंतु लोग इनसे उतना परहेज नहीं करते जितना दक्षिणमें महारोंसे। वहां इन लोगोंको घर छँवाने में छप्पर पर नहीं चढाते। इनके लिये नल और कुएँ अलग अलग रहते हैं। महाकोशल में इतना विचार नहीं है। एक कुएँ और नल से सब निस्तार करते हैं। हिंदु, जैन और इस्लाम धर्म का प्राबल्य है। यहां वाममार्गिओंकी कुछ झलक ४० वर्ष पूर्व थी। अब केवल शाक्ति के उपासक इने गिने रह गये हैं। देवी के मंदीर हर जगह हैं। छत्तीसगढ में सतनामी चमार बहुत हैं। मध्यप्रान्त में सबसे अधिक कबीरपंथी जबलपूर जिले में हैं। मांसाहार और मदिरापान घटता जाता है। मंगल कार्यों में नाच बहुत हुआ करता था अब यह प्रथा लुप्त हो गई है। यहां अति वृष्टि और अनावृष्टि के कारण १८९२ से १९०० तक दुष्काल सख्त पडा।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबलपूर

जबलपूर जी. आय. पी. और बी. एन. रेल्वे का जंक्शन स्टेशन है। मिरजापुरसे पक्की सडक जबलपुर होकर गई है मध्यप्रदेश की राजधानी नागपूर (भोसलोंका) है और जबलपुर इस प्रान्तका दूसरा बडा शहर है। इसकी मनुष्य संख्या एक लाखसे उपर है। इसका पुराना नाम जाबालि ऋषि के आश्रम परसे जाबालिपट्टन और पहाड (जबल) बहुत होनेके कारण जबलपुर पडा ऐसा बताते है। ठग लोगोंका यहां भी दौर दौरा था परंतु स्लीमन साहेबने सन १८२६ और १८३५ इ. के बीच कोई २००० ठगोंको पकडकर फाँसीपर चढवा दिया और सल १८४८ के भीतर भीतर इन दुष्टोंका समूल विनाश कर दिया। इनके परिवारके उदर पोषण को एक कारखाना खोला गया था, जो कचहरीके सामने पुराना लाखखाना के नामसे प्रसिद्ध है। कोतवाली भी पुराना स्थान है यहां मल्हारराव के समय में लोगोंको सख्त सजा दी गई थी। जबलपुर शहर में सन १९०० से प्लेग लगभग २० वर्ष तक हर दूसरे साल या प्रतिवर्ष होता रहा। इन्फ्ल्युयेन्जासे भी सन १९१८ में इस जिलेमें ४२००० मनुष्य मृत्युके मुख में पडे। गोली बारुद बनानेका बडाभारी कारखाना शहर से ३।४ मील पर है जिसे Gun Carriage factory कहते हैं। पोलीस मोहकमेंका स्कूल हेडकॉनिस्टेबलोंके लिये, कॉलेजसे १ मील और आगे चलकर स्थापित हुआ है। राबर्टसन कालेज इसी रास्तेपर शहरसे ४ मीलकी दूरीपर है। इसीके पास एक बडा तालाब है जो कटनी-जबलपुरकी रेलगाडीसे दिखता है। उसीके पास पहाडोंपर भी अंग्रजी पल्टन के बॅरेक्स बने हुए है। गढासे सदरतक हजारों आमके वृक्षोंकी अमराई, गोंडराजाओंकी लगवाई हुई, अभी भी कुछ बची है।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबलपुरसे गढ़ाकी सडकपर बाँये हाथपर एक रमणीय, चित्तको शांति देनेवाला देवताल नामक सुंदर छोटासा तालाव है जो चहुं ओर उंची उची और एक दूसरेके पास पास पहाडियोंके बीच घिरकर स्वाभाविक वन गया है। इस दृश्यके सिवाय गढामें अन्यभी स्थान मंदिरादि देखने योग्य हैं। पास ही में पहाडके उपर एक चट्टान-पर खडा " मदन महल " है। यहां आनेपर लोगोंको यह दोहा याद आता है--- " मदनमहल की छाँह में दो टोलों के बीच। जमा गडी नौ लाख की दो सोनेकी ईंट ॥ " गढामें सडक बनाते समय कुछ गडा धन मिला भी था। गढासे एक मील पहाडपर पीसनारी का मंदीर है। उपर चढनेको सिढीयाँ बनी है। उसके पश्चात ' संग्रामसागर ' तालाव और बाजना मठ है। इस भैरवी मदिरमें यंत्र खुदे हुए है। यह तांत्रिक लोगोंका स्थान है। गढासे लम्हेटा. तिलवारा और भेडाघाट जानेके रास्ते फूटते हैं। गढा और जबलपुर के पास बावन तालाव थे। उनमें रानीताल, चेरीताल आधारताल आदि गोंडोंके समय के मौजूद हैं।

राबर्टसन कॉलेज; ट्रेनींग कॉलेज; हितकारणी सिटी कॉलेज; हाय-स्कूल्स, संस्कृत पाठशाला, रिफार्मेटरी स्कूल इत्यादि विद्या और कला कौशल्य के केन्द्र हैं। इसके अतिरिक संस्कृत, ज्योतिष्य वैद्यक इत्यादि विषयों का अध्ययन करने का सुभीता पंडित-लोगोंके निजी संस्थाओं में है।

त्रिपुरी की विशेष शोभा बढानेवाली तीन पहाडों की एक तिकोनी पर्वत श्रेणी है। एक कोनेपर गढा, दूसरीपर गौर नदी और तिसरीपर नमर्दा नदी है। त्रिपुरीमें विशेषकर घरके बाहर बडे भोर से ही पक्षी अपने मधुर अथवा कर्कश स्वरों से लोगों को जगाने लगते हैं। चालाक कौआ सब से पहिले उठकर शोर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मचाता है। तदन्तर भूचंग (करंजुआ), लवा, पिलक, कुक्कु आदि बोलने लगते हैं दिनमें गौरय्या, गलगल, नीलकण्ठ कोयल, फूलसुंघनूं, मैना, बसंता, कठकुल्ला, डाक्या (फाक्ता) बुलबुल, सुआ दहियल, दामा (पिदडी), कबूतर, बाज, बदक, चंडल चील, गीद्ध, उल्लू आदि, पानी के किनारे कौडीला [खञ्जन, धोबन] टिटेंगी, बगलाभगत सारसादि अनेकानेक पक्षीवृंद ईश्वरकी सृष्टिका सौंदर्य बढाते दिख पडते है और सुनपडते है।

लालमुँहा बंदर, करमुँहा बंदर, बाघ, चीता, तेंदुआ, सुनकुत्ता, लडैय्या, लोमडी आदि जानवरों की भी कमी नहीं है। धामन साँप, पनिया साँप, अजगर, नाग, फुरसा, बोई और अन्य जहरीले साँप भी कहीं कहीं है।

नर्मदामें मगर बहुत है। कछुवा नाममात्रको, मछलियोंमें महासीर, मुरल (सावल) रोहू, मगूरा, सिंगण, चिलवा (चेहला) बाम, पढन, कंटिया, भाकूर, करची, सौंर, डड़ेर, सिन्हा आदि अनेक जातिकी मछली दृष्टिगोचर होती है।

आम, कैथा, जामून, साल, कुसुम, हर्रा, महुवा, पीपल, बड, बबूल, सीताफल, गन्यार सेमर, कचनार, अमलतास, धवई, कोहा बेल, तेंदू, करौंदा, छेवला (ढाकपलास) आदिवृक्ष शहर सडकों तथा जगलों में हैं। केसरिया बाना पहने हुए झगड्रू के झाड मानो देखनेवालों के मन में वीररसका संचार कर रहे हैं। टेसू के लाल २ फूलोंका जंगल मानों जरुरी कर्तव्य बताते हैं और असत्य और हिंसा के रोकने को लाल २ झंडिया चहुँ ओर से बता रहे है और भेडाघाट के श्वेत शुभ्र संगमर्मर (गोरापत्थर) की चट्टानें हृदय को ऐसे ही स्वच्छ और निर्मल रखनेके लिये

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आकाश की ओर मुख किये नर्मदा जलकणोंसे टकराती हुई निनादसे ईश्वर की प्रार्थना कर रही है।

DIGITIZED C DAC
2005-2006

10 JUL 2006

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषय सूचि ।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विक्रीके लिये तैयार

ग्रंथ कर्ताकी अन्य पुस्तकें:—

१ भारत वर्षीय पंचांगकी विलक्षणता— मूल्य =)

२ कौनसा पंचांग खरीदें ?— मूल्य =)

मिलनेका पत्ता:—

पंडित प्रेमशंकर उदयशंकर दवे
अमरावती (वऱ्हाड)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha